उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० हि० – पत्र
दिगंत – भाग – 2 – काव्य खण्ड
शीर्षक – कड़बक, कवि – जायसी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर –

प्रश्न :– कड़बक क्या है?
सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने ग्रंथ पद्मावत तथा अखरावट में लेखन का एक ढंग अपनाया है। उसमें सात चौपाइयों के बाद एक दोहा रखने का क्रम है। यही क्रम विधान पूरी रचना में है। इसी इकाई को कड़बक कहा जाता है। इसे हम छन्द विधान की पद्धति भी मान सकते हैं।

प्रश्न :– प्रेम की पीर क्या है?
उत्तर :– हिन्दी साहित्य के इतिहास में मुसलमान संतों के एक समूह को [redacted] संत कहा गया है। इनमें जो दार्शनिक मान्यता प्रचलित है उसके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति उनके वियोग में तड़पने और तन्मयता पूर्वक एक मिष्ठ भाव से प्रेम दशा में रहने से होती है। अतः प्रेम में पीड़ा की अनुभूति यही प्रेम की पीर है।

प्रश्न :– रतनसेन कौन थे?
उत्तर :– रतन सेन चितौड़ के राजा थे। उन्होंने बड़ी प्रेम साधना के उपरांत पद्मावती को प्रेमिका पत्नी के रूप में प्राप्त किया था। अलाउद्दीन दिल्ली का मुसलमान शासक था। उसने पद्मावती के रूप की प्रशंसा सुनकर उसे पाने के लिए चितौड़ पर आक्रमण कर दिया। राघव चेतन रतन सेन का दरबारी पंडित था। किसी कारण वश राजा ने उसे दरबार से निकाल दिया था। उसी ने बदला लेने के लिए अलाउद्दीन को प्रेरित किया था। इसी प्रेमकथा पर जायसी ने अपना पद्मावत काव्य लिखा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना पूर्णियाँ 07/04/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०क्रि०-पत्र
जयद्रथ वध — काव्य खण्ड
कवि - मैथिलीशरण गुप्त

हर शोक पाण्डव पक्ष का, निज शिविर में हरि भी गये,
फिर शीघ्र ही भगवान ने प्रकटित किये कौतुक नये।
कर योगमाया को सजग निद्रित जगत की व्याप्ति को।
झट ले चले वे पार्थ को शिव निकट अस्त्र-प्राप्ति को॥

भावार्थ:- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि भक्त से छले जाने के बाद भगवान ने अपनी पूर्ण माया फैला दी। इसके पश्चात् पाण्डव पक्ष का शोक दूर करने के उपरांत स्वयं भगवान भी अपने डेरे (शिविर) में चले गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने शीघ्र ही नये-नये खेल करने आरम्भ कर दिये। सर्व प्रथम उन्होंने अपनी योगमाया की शक्ति को जागृत किया और उसे सम्पूर्ण संसार में फैला दिया। इसके बाद स्वयं भगवान अर्जुन को साथ में लेकर भगवान शिव के पास अस्त्र प्राप्ति के लिए ले गये।

प्रस्तुत पद में राष्ट्रवादी कवि ने भगवान की योगमाया का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। भगवान शिव से अस्त्र प्राप्त करने के पश्चात् अर्जुन अजेय हो गये।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं० महावि० सुरवसेना, पूर्णियाँ
०४/०४/२०

रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द जैसे सपूतों की मातृभूमि है। यह वैसे लोगों की धरती है जहाँ के महामानव प्रताड़ना की अग्नि पीकर अंग्रेजों के अत्याचार का कालकूट पान कर साक्षात शंकर बन गए हैं। इन्हीं सब तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को राष्ट्र का गौरव मानता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महा वि० सुरकसेना, पूर्णियाँ
०४.०४.२०

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

निबंध माला

शीर्षक - महा-मानव-सागर-तीरे, Date: _____ Page: _____

लेखक - डॉ० रमाकान्त पाठक

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न :- 'महा-मानव-सागर-तीरे' किस प्रकार का निबंध है?

उत्तर निबंधकार डॉ० रमाकान्त पाठक द्वारा लिखित निबन्ध महा-मानव-सागर-तीरे एक विचारात्मक निबंध है। इस लेख में विद्वान निबंधकार के सम्पूर्ण भारत के प्रसंग में बंगाल की महिमा का गौरवपूर्ण मूल्यांकन किया गया है।

प्रश्न :- लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप क्यों मानता है?

उत्तर :- निबंधकार का कहना है कि बंगाल यद्यपि भारत का एक प्रान्त है, तथापि इसे देश का एक छोटा प्रतिरूप कहा जा सकता है। आदिकाल से ही हमारे प्राचीन ग्रंथों में इसकी महिमा का उल्लेख है। इसके पावन तीर्थ गंगा-सागर को देखकर ही जहाँ व्यास जी ने गीता को 'स्थित-प्रज्ञता' की कल्पना की होगी। महासागर एवं हिमालय की ऊतुंग चोटियों को देखकर ही महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम का स्वरूप निर्धारित किया होगा। हिन्दुस्तान को छोटे रूप में देखना हो तो एक बार अवश्य बंगाल की राजधानी में प्रवेश करना चाहिए। बंग सागर में मिलने के लिए ही गंगा हिमालय से निकल धरती पर आयी है। ऐसे ही तथ्यों के आधार पर लेखक बंगाल को देश का एक छोटा प्रतिरूप मानता है।

प्रश्न :- बंगाल सदैव से ही राष्ट्र का गौरव रहा है कैसे?

उत्तर :- बंगाल सदैव से ही भारतीय मेधा, हिन्दुस्तानी संस्कृति, राष्ट्र के गौरव और तेज बल का प्रतीक रहा है। इसके विवेक एवं दूरदृष्टि का कोई जोड़ नहीं है। किसी जमाने में हमारे पूर्वजों ने भारतीयों को समुद्र पार किया तो सेतु बंध जैसे महातीर्थ की स्थापना कर लंका में विजय पताका फहराई गयी थी। बंगाल की भूमि रवीन्द्र, नाथ टैगोर, सुभाष चन्द्र बोस, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर —

शेष अगले -